चित्रा मुद्गल समेत 24 लेखक साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली (एसएनबी)। हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल समेत 24 लेखकों को मंगलवार को साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अकादमी के अध्यक्ष एवं कन्नड़ के प्रख्यात नाटककार चंद्रशेखर कम्बार ने एक गरिमापूर्ण समारोह में इन लेखकों को वर्ष 2018 के लिए यह पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार में एक लाख रुपए की राशि प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न एवं शाल शामिल हैं। अंग्रेजी के लेखक अनीस सलीम और ओडिया लेखक दशरथी दास की गैरमौजूदगी में ये पुरस्कार उनके प्रतिनिधियों ने प्राप्त किए।

> चित्रा मद्गल को यह पुरस्कार 'पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा' पर दिया गया जो किन्नर के जीवन पर आधारित है

पैंसठ वर्षीय चित्रा मुद्गल को यह पुरस्कार 'पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा' पर दिया गया जो किन्नर के जीवन पर आधारित है। गत 45 वर्षों से साहित्य में सक्रिय श्रीमती मुद्गल की पहली कहानी 1964 में 'सफ़ेद सेनारा' नाम से नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुई थी। कम्बार ने राजस्थानी भाषा के लिए राजेश कुमार व्यास, उर्दू के लिए रहमान अब्बास, मैथिली के लिए वीणा ठाकुर, संस्कृत के लिए रमाकांत शुक्ल और पंजाबी के लिए मोहनजीत को यह पुरस्कार प्रदान किया।

पुरस्कृत होने वाले अन्य लेखकों में संजीव चट्टोपाध्याय बंगला, सनंत तांती असमिया, ऋतुराज बसुमतारी, बोडो इंदरजीत केसर डोगरी, शरीफा बिजलीवाला गुजराती के जी, नागराज्प्प कन्नड़, मुश्ताक अहमद मुश्ताक कश्मीरी, परेश नरेन्द्र कामत कोंकणी, एस रामेशन नायर मलयालम , बुधिचंद्र हैस्नाबा मणिपुरी, मसु पाटिल मराठी, लोकनाथ उपाध्याय चाप्पाई नेपाली,श्याम बेसरा संताली, खीमन यू मुलानी सिन्धी, एस रामकृष्णन तमिल, कोलाकुरी इनाक,तेलुगू शामिल हैं। समारोह के मुख्य अतिथि मनोज दास, विशिष्ट अतिथि और श्रीलंका के प्रसिद्ध लेखक संतान अय्यातुरे ने भी संबोधित किया। स्वागत अकादमी के सचिव के श्री निवास राव ने किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव माधव कौशिक ने किया।

'शब्दकोषों के हजारों शब्द ले दर्द का अनुवाद कोई क्या करेगा..'

साहित्योत्सव में 'अनुवाद की चुनौतियां और समाधान' विषय पर परिचर्चा में बोले देश-दुनिया के अनुवादक

Amit.Upadhyay1@timesgroup.com

साहित्योत्सव में बुधवार को 'अनुवाद की चुनौतियां और समाधान' विषय पर परिचर्चा हुई। देश और दुनिया के कई भाषाओं के अनुवादक और साहित्यकारों ने अपनी बात कही। साहित्य अकादमी ने प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और अनुवादक सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फैलोशिप अवॉर्ड से सम्मानित किया। वक्ताओं ने साहित्य में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए चुनौतियों और समाधानों पर चर्चा की।

साहित्य अकादमी के वाइस प्रेसिडेंट माधव कौशिक ने कहा कि दुनियाभर में साहित्य और ज्ञान का आदान प्रदान अनुवाद से ही हो पाया है। जितना पुराना साहित्य का इतिहास है, उतना ही अनुवाद का। जिस दिन दुनिया में ऑरिजनल राइटिंग की शुरुआत हुई, उसी दिन अनुवाद की भी हुई। अनुवादक निस्वार्थ भाव से भाषा और साहित्य में योगदान देते हैं। इसमें ना सिर्फ शब्दों, बल्कि भावों का भी अनुवाद करना होता है। सही शब्दों का चयन अनुवाद की बड़ी चुनौती है। उम्मीद है कि आने वाले 100 साल अनुवादकों के हैं। भविष्य में इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं और यह साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण भी हैं। उन्होंने एक कविता की पंक्तियों से अनुवादक को परिभाषित किया 'शब्दकोषों के हजारों शब्द लेकर, दर्द का अनुवाद कोई क्या करेगा..'। कार्यक्रम में हिंदी, उर्दू, कश्मीरी, अंग्रेजी, मराठी, पंजाबी, ओड़िया, तमिल और उर्दू के जानकारों ने विचार रखे। सरकार और साहित्य अकादमी से अनुवादकों को ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान करने की अपील भी की।

अनदेखी का छलका दर्द

परिचर्चा में अनुवादकों की अनदेखी का दर्द छलका। कई वक्ताओं ने कहा कि अनुवादकों को वह सम्मान नहीं मिल रहा, जिसके वे हकदार हैं। वे कितने ही निस्वार्थ भाव से रचना का अनुवाद करें, लेकिन प्रकाशक उनकी अनदेखी करते हैं। साहित्यकार पूरनचंद टंडन ने कहा कि अब साहित्य और संस्कृति के अनुवाद की कोई व्यावसायिक मांग नहीं है। यही कारण है कि प्रशासनिक अनुवादकों को तो संस्थानों से प्रशिक्षण मिल जाता है, लेकिन साहित्य के अनुवादकों को खुद इसकी गहराई तक जाकर सीखना पड़ता है।

अनुवाद की यूनिवर्सिटी बननी चाहिए

टंडन ने कहा कि देश की कई कालजयी रचनाएं ऐसी हैं, जिनका आज तक अनुवाद नहीं हुआ। इनके अनुवाद से साहित्य जगत और मजबूत बनेगा। सरकार को अनुवाद की अलग यूनिवर्सिटी बनानी चाहिए, ताकि साहित्य को उभारा जा सके। वैसे तो भारत का हर व्यक्ति जन्मजात अनुवादक है, लेकिन प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभा को निखारा जा सकता है। साहित्य अकादमी जैसे अन्य संस्थान बनाने की भी उन्होंने मांग की।

साहित्य में घट रहे शब्द

गुजराती साहित्यकार आलोक गुप्त ने कहा कि कविताओं में शब्दों की कमी हो रही है। पहले कविताओं में हर भाव के लिए अलग शब्द का प्रयोग होता था, लेकिन आज कम से कम शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। यह चिंतनीय है, क्योंकि मजबूत शब्दकोष के बिना अनुवाद संभव नहीं है। उन्होंने अनुवाद की गई रचनाओं के विश्लेषण के लिए एक पैनल बनाने की भी मांग की।

प्रो. नारंग की आवाज में फिजाओं में गूंजे फैज

हंस राज ● नई दिल्ली

'अभी चिराग-ए-सर-ए-रह को कुछ खबर ही नहीं, अभी गरानि-ए-शब में कमी नहीं आई, नजात-ए-दीद-ओ-दिल की घड़ी नहीं आई, चले चलो कि वो मंजिल अभी नहीं आई...।' मौका था साहित्य उत्सव के वार्षिक संवत्सर व्याख्यान का, जहां उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. गोपीचंद नारंग 'फैज अहमद फैज- तसव्वुरे इश्क, मानी आफरीनी और जमालियाती एहसास' विषय पर बोल रहे थे।

फैज का इश्क आम नहीं इंकलाबी: करीब दो घंटे तक चले सत्र को तीन खंडों में बांटकर प्रो. नारंग ने पाकिस्तान से ज्यादा भारत में मशहूर शायर फैज के तीन इश्क को बयां किया। फैज के इश्क को आम नहीं इंकलाबी इश्क बताते हुए जब आखिरी में उन्होंने उनका मशहूर शेर 'दिल नाउम्मीद तो नहीं नाकाम ही तो है, लंबी है गम की शाम मगर शाम ही तो है' पढ़ा तो सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

शायर फैज अहमद फैज के अफसानों पर बोलते प्रो. गोपीचंद नारंग ● जागरण

अन्य गतिविधियों ने भी खींचा ध्यान: छह दिवसीय उत्सव के तीसरे दिन भी साहित्य व पुस्तक प्रेमियों की चहल-पहल रही। कार्यक्रम के शुरुआत में 'लेखक-सम्मिलन' में पुरस्कार विजेता लेखकों ने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। वहीं, 'उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन' में रचनाकारों ने कविता-कहानी का पाठ किया। दोपहर दो बजे से 'भाषांतरः अनुवाद की चुनौतियां और समाधान' परिचर्चा में प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक को 'प्रेमचंद फेलोशिप-2017' प्रदान किया गया।

विश्वनाथ तिवारी को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता

जासं, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी की प्रतिष्ठित महत्तर सदस्यता (फेलोशिप) के लिए चार लेखकों का चयन किया गया। इसमें अंग्रेजी लेखक जयंत महापात्र, डोगरी कवयित्री एवं गीतकार पद्मा सचदेव, असमिया लेखक नगेन शइकीया व हिंदी के कवि-आलोचक एवं संपादक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का नाम शामिल है। उन्हें महत्तर सदस्यता के लिए नामित करते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि प्रो. तिवारी की आलोचना जीवंत आलोचना है। वहीं, अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने भी डॉ. तिवारी की साहित्यिक रचनाओं का जिक्र करते हुए उन्हें इस सम्मान के लिए बधाई दी। सृजन की तीन प्रमुख विधाओं कविता, आलोचना और संस्मरण पर अनवरत कलम चलाते रहने वाले डॉ. तिवारी

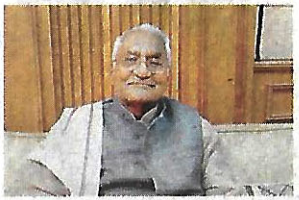

आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ●

का जन्म 20 जून 1940 को कुशीनगर में हुआ। डॉ. तिवारी गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं और उनकी 70 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे वर्ष 1978 से हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'दस्तावेज' का संपादन भी कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय पुश्किन पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, व्यास, साहित्य भूषण, हिंदी गौरव सम्मान प्राप्त कर चुके डॉ. तिवारी की कई कृतियां चर्चित रहीं हैं।

ओझल नहीं हुईं, कुर्सी पर बैठी मुस्कुरा रही थीं कृष्णा

DJ 31/1/19 p.3 (Mag)

स्मृति शेष

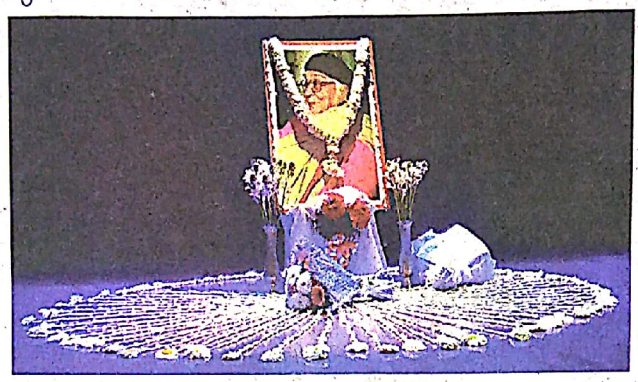

बात ज्यादा पुरानी नहीं है, स्मृति पटल पर अभी ताजी सी ही महसूस होती है जब उनको यहां आते देखते थे...। मंडी हाउस और बंगाली मार्केट को जोड़ने वाला तानसेन मार्ग। यहीं पर है त्रिवेणी कला संगम का सभागार। अक्सर हर आयोजन में शिरकत करने आया करती थीं...हिंदी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर कृष्णा सोबती। भले शिष्य नहीं बनाए सोबती जी ने लेकिन उनके लेखन से पता नहीं दशकों में कितने नवांकुर साहित्यकार फूटे और लेखन की बगिया को पुष्पित पल्लवित कर रहे हैं। कृष्णा जी की यादों की ऐसी ही बरात सजी थी सभागार में। सोमवार यानी 28 जनवरी की सांझ सभागार में देश के कोने-कोने से पहुंचे साहित्यकारों की पलकें नम थीं उनकी स्मृति में। यादें, जो कुछ सजी थीं मन के ही भीतर तो कुछ अल्फाज में मथ बाहर सज रही थीं। बार-बार हर नजर ठहर रही थी उस कुर्सी पर जिस पर फूलों की माला पहने बड़े से चश्मे वाली कृष्णा सोबती की तस्वीर छोटी मुस्कान लिए बैठी थी। उसी सभागार में आयोजित स्मृति सभा में देश के कोने-कोने से पहुंचे साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों की आंखें मंच पर रखी एक कुर्सी पर टिकी थीं, जिस पर कृष्णा सोबती की तस्वीर सभा में अपनी मौजूदगी दर्ज करवा रही थी। उनकी पंक्तियां सभागार में एक उत्साह का संचार कर रही थीं। जो साहित्य के साधकों को यह स्वीकार नहीं करने दे रही थीं कि 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'दिलोदानिश', 'जिंदगीनामा', 'ऐ लड़की', 'मित्रों मरजानी' और 'हम हशमत' जैसी कालजयी रचना से कथा साहित्य को अप्रतिम ताज़गी और स्फूर्ति प्रदान करने वाली कृष्णा सोबती से साक्षात्कार अब सिर्फ उनकी कृतियों के माध्यम से ही संभव है। स्मृति सभा में कृष्णा सोबती का स्नेह और सहयोग प्राप्त करने वाले दर्जनों स्थापित और नवांकुर साहित्यकार अपनी यादें साझा करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। अपने समय के कथाकारों को शोहरत के स्तर पर बराबरी की टक्कर देने वाली कृष्णा सोबती की इस परंपरा को पुख्तगी देने वाली मृदुला गर्ग उन्हें याद करते हुए कह रही थीं कि शब्दों की समृद्ध भंडार कृष्णा सोबती में दिखावा लेस मात्र नहीं था। बहुत कम ऐसे लेखक हुए हैं जो वैसा ही लिखते हैं जैसा वो बोलते हैं। भाई जगदीश सोबती बचपन के किस्सों का जिक्र करते हुए बड़ी बहन की एक पसंदीदा कविता 'मैं झूठ न बोलूंगी, मेरी पत्थर की आंखें भर आती हैं...' पढ़ते हैं और उपस्थित लोगों की आंखें नम हो जाती हैं। वहीं जब प्रोफेसर अपूर्वानंद वर्षों पहले त्रिवेणी सभागार में ही आयोजित एक कार्यक्रम में दिवंगत लेखिका की मजाकिया लहजे का जिक्र करते हुए कहा कि 'एक साहित्यिक कार्यक्रम था और कृष्णा जी मुख्य अतिथि थीं। वो जब मंच पर पहुंची तो उनकी कुर्सी के सामने लगी मेज पर बिछा हरे रंग का चादर कुछ अव्यवस्थित था। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि यह चादर ऐसा क्यो है? मैंने जब यह कहते हुए खुद का बचाव किया कि मैम मैं आयोजकों में से नहीं हूं तो उन्होंने तुरंत कहा आयोजकों में से नहीं हैं लेकिन आप व्यवस्थित तो कर सकते हैं। यही नहीं जब आयोजक उनसे मिले तो संयोगवश वो भी हरे रंग का कुर्ता पहने हुए थे। कृष्णा जी ने मजाकिया लहजे में उनसे कहा चादर कहीं-कहीं से छोटी रह गई है, कहीं आपने चादर के कपड़े से ही कुर्ता तो नहीं बनवाया है।' तो लोगों के चेहरे पर सम्मान भाव की मुस्कान लौट आई। आखिरी वक्तव्य में आयोजक रजा फाउंडेशन के प्रमुख व हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी ने कृष्णा सोबती को समय और समाज को केंद्र में रखकर अपनी रचनाओं में एक युग को जीने वाली बताते हुए कहा कि उन्होंने हिंदी को नैतिक संकोच से आजाद किया।

-हंस राज़

हिंदी की एक अद्वितीय उपस्थिति का अवसान

ज्योतिष जोशी, लेखक

कृष्णा सोबती, हिंदी की संभवतः पहली लेखिका रहीं जिन्होंने अपने लेखन को स्त्री लेखन नहीं माना और अपनी बेलौस अभिव्यक्ति से पूरे समाज को आंदोलित कर दिया। अविभाजित भारत के पंजाब में जन्मीं, जीवन की मर्मान्तिक तकलीफों से गुजरीं सोबती ने लेखन को अपना मूल ध्येय बनाया और जो लिखा वह बेमिसाल बना। उनकी शिक्षा-दीक्षा पहले लाहौर फिर शिमला तथा अंत में दिल्ली में हुई। दिल्ली में रहते आरंभिक वर्षों में उन्होंने नौकरी भी की। मुझे याद है 1992 से लेकर 1996 तक का दौर जब वो दिल्ली के मयूर विहार इलाके में रहती थीं और मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का छात्र था। मैं, मेरे मित्र निरंजनदेव शर्मा, बिहार के एक दो और लड़के नियमित उनके यहां जाते थे। वो हमारे संघर्ष के दिन हुआ करते थे। जब भी हम जाते तो कृष्णा जी हमसे बहुत आत्मीयता से मिलती थीं। जब हम चलने को होते तो हमारी जेब में सौ या पचास रुपये रख देती थीं। हमें कभी डायरी, कभी खूबसूरत कलम भी गिफ्ट करती थीं। जो किताब उनको पसंद आती थी वो हमें पढ़ने के लिए देती थीं और कहती थीं कि पढ़ना जरूर। मुझे एक और रोचक प्रसंग याद है। एक बार हमलोग कृष्णा जी के घर पहुंचे तो उनके घर में सफेदी हो रही थी। किताब और अन्य सामान इधर-उधर बिखरे थे। मुझे उसमें कृष्ण बलदेव वैद के दो पत्र दिखे जिसे मैं उनके घर से ले आया। कृष्णा जी और वैद साहब के बीच बेहद रागात्मक संबंध थे। मैं जो पत्र ले आया था उसको वैद जी ने हशमत को संबोधित किया था। पत्र को वैद साहब इस तरह से लिखते थे जैसे वो किसी पुरुष को संबोधित कर रहे हों। सही मायनों में वे भारतीय उपमहाद्वीप की वह आखरी बड़ी उपस्थिति थीं जिनमें अपने साझा मूल्यों की चिंता थी। ऐसी लेखिका का अवसान निश्चय ही हिंदी ही नहीं, समग्र भारतीय लेखन के लिए एक बड़ा आघात और ऐसी क्षति है, जिसकी असंभव सी है।

Scanned by CamScanner

दैनिक भास्कर बीकानेर, बुधवार 30 जनवरी, 2019

• नई दिल्ली में व्यास को मिला सम्मान, इधर... कवि जयसिंह भी नवाजे जाएंगे

डॉ. राजेश कुमार व्यास को मिला केन्द्रीय साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

संस्कृतिकर्मी, कवि एवं आलोचक डॉ. राजेश कुमार व्यास को मंगलवार को केन्द्रीय साहित्य अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया गया। केन्द्रीय साहित्य अकादेमी द्वारा नई दिल्ली में आयोजित साहित्यिक समारोह में अकादेमी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर कम्बार ने उन्हें एक लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और ताम्र फलक प्रदान कर सम्मानित किया। डॉ. व्यास को उनकी काव्य कृति 'कविता देवै दीठ' के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। व्यास की साहित्य की विभिन्न विधाओं में अब तक 21 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। वहीं डॉ. व्यास को इससे पहले राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति अकादमी के 'गणेशीलाल व्यास उस्ताद 'पद्य' पुरस्कार के साथ ही भारत सरकार का प्रतिष्ठित 'राहुल सांकृत्यायन' अवार्ड, राजस्थान सरकार की ओर से उत्कृष्ट लेखन पुरस्कार,

पत्रकारिता का प्रतिष्ठित 'माणक' अलंकरण, अंतरराष्ट्रीय धुरवपद धाम सोसायटी का 'विशिष्ट लेखनी पुरस्कार', श्रीगोपाल पुरोहित स्मृति गुणीजन सम्मान', पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया की ओर से 'जनसंपर्क उत्कृष्टता सम्मान', राजस्थानी भाषा अकादेमी का 'भाषा सेवी' सम्मान सहित विभिन्न अन्य पुरस्कारों से भी निरंतर सम्मानित किया जाता रहा है।

कवि जयसिंह आशावत को मिलेगा संस्कर्ता साहित्य सम्मान

साहित्यकार नानूराम संस्कर्ता स्मृति राजस्थानी साहित्य सम्मान के लिए इस बार नैनवां (बूंदी) के राजस्थानी कवि जयसिंह आशावत को चुना गया है। आशावत को यह सम्मान उनकी राजस्थानी काव्य कृति 'अब पाती कांई लिखां' के लिए दिया जाएगा। सम्मान समिति के संयोजक रामजीलाल घोड़ेला ने बताया कि इस बार यह सम्मान कविता विधा में दिया जाना था। चयन समिति में साहित्यकार मधु आचार्य आशावादी, दीनदयाल शर्मा व डॉ मूलचंद बोहरा शामिल थे। सम्मान समारोह यहां कालू कस्बे में होगा। तिथि की घोषणा अभी नहीं हुई है।

Cut & Keep

35वां साहित्योत्सव

शब्दों की खुशबू से महकती अकादमी की धरा...लेखन की दुनिया के सरताजों से जमीं यहा की सजी हुई है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को समर्पित साहित्य अकादमी का 35वां साहित्योत्सव। यहा नैतिकता के स्तभ उनके तीन बदर, बुरा न देखो...बुरा न सुनो और बुरा न बोलो बेहद सादगी से इस महोत्सव में आपका स्वागत कर रहे हैं।

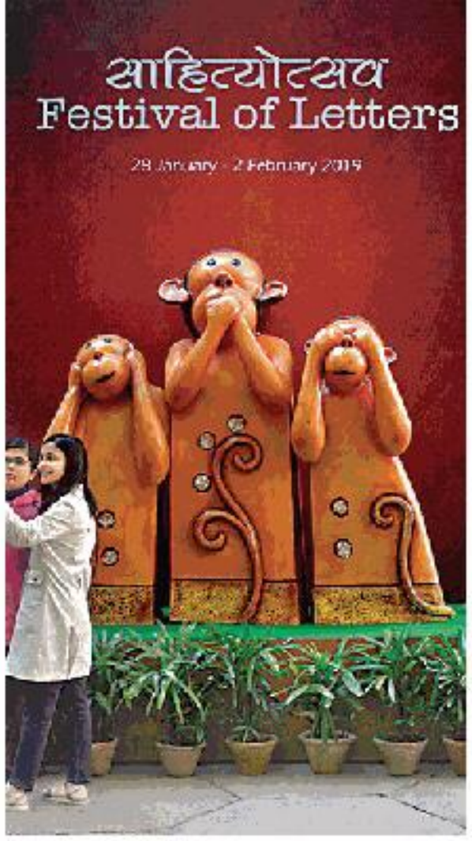

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती विशेष को ध्यान मे रखते हुए उन पर लिखित किताबो को अकादमी मे कुछ इस तरह सजाया गया है।

किताब और कातिब की महफिल

फिजशाह रोड। आज कल सुबह 10 बजे से ही यहां एक अलग किस्म की चहल-पहल बढ़ जाती है, आने वालों के लिबास से ही आभास हो जाता है जरूर ही साहित्यिक बिरादरी के बाशिंदे हैं। दरअसल रवींद्र भवन स्थित साहित्य अकादमी के साहित्योत्सव में सुबह दस बजे से शुरू हुए आयोजनों का सिलसिला देर शाम तक चलता है। ज्यों-ज्यों आफ्ताब अपने घर की ओर गाम बढ़ाता है और माहताब के साथ सांझ की रंगत सजती है तो साहित्यकारों की महफिल और खूबसूरत होती जाती है। यहां परिसर में आगे बढ़ते ही किताबों की खुशबू से सजा परिसर साहित्य प्रेमियों को एक अद्भुत अनुभूति का एहसास कराता है। चर्चा सत्र के लिए बनाए गए सभागार में प्रवेश से पूर्व लगी चित्रों की प्रदर्शनी अकादमी की साल भर की उपलब्धियों से अवगत कराती है और सभागार के विभिन्न सत्र में देशभर से पहुंचे 24 भाषाओं के 250 से ज्यादा साहित्यकारों की मौजूदगी भारतीय भाषाओं की समृद्धि के गीत सुनाती है। 28 जनवरी से शुरू हुए साहित्य के इस उत्सव में एक ओर पुस्तक प्रेमी 3500 से अधिक किताबों के कुंभ में ज्ञान स्नान कर रहे हैं। वहीं अपने पसंदीदा रचनाकार और विचारकों से सीधे संवाद का भी सुनहरा अवसर है। यही नहीं, 2 फरवरी तक चलने वाले साहित्योत्सव में विगत वर्षों की भांति इस बार भी कई नई गतिविधियां शामिल की गई हैं, जिसे साहित्य और संस्कृति प्रेमियों की भरपूर सराहना मिल रही है।

'साहित्य अकादमी पुरस्कार-2018' से सम्मानित साहित्यकारो ने साझा किए अपने अनुभव, किस तरह दिल्ली उनके लेखन मे, मन में रची-बसी है।

देश का गौरव दिल्ली, देश का अभिमान है दिल्ली...और यह गौरव इसे यूं ही हासिल नहीं है। तभी तो प्रांत-प्रांत से आए साहित्यकार, लेखक, पढ़ने-लिखने वाले भी इस जमीं पर पांव जमाने को बेचैन से दिखते हैं। विभिन्न भाषाई साहित्यकार, लेखक जब दिल्ली आते हैं तो शहर उनके लिए नया सा होता है और कुछ ही सालों में शहर उनका और वे उसके हो जाते हैं। साहित्योत्सव में पहुंचे क्षेत्रीय-राज्य भाषाई लेखक दिल्ली से कुछ ऐसे ही दिल लगाए बैठे हैं। कुछ रचनाकार अपनी पुरस्कृत कृतियों के पात्र को दिल्ली से जोड़कर यादें साझा कर रहे हैं तो कुछ लिखने की प्रेरणा दिल्ली की साहित्यिक और ऐतिहासिक विरासत को बता रहे हैं। महोत्सव के दूसरे दिन आयोजित 'साहित्य अकादमी पुरस्कार-2018' के विजेताओं ने भी अपनी रचनाओं में दिल्ली की साहित्यिक फिजाओं को स्वीकार किया।

भाषा हो जाती है समृद्ध

समकालीन समाज में मानव मूल्यों के व्यापक क्षरण, अपकर्ष व मानव जीवन पर इसके विनाशकारी प्रभावों का चित्रण करती पुरस्कृत मैथिली कृति 'परिणीता' की लेखिका वीणा ठाकुर के शब्दों में भी दिल्ली की व्यापक मौजूदगी नजर आती है। बतौर कथानक प्रो ठाकुर ने एक ओर जहां कहानी के मुख्य पात्र द्वारा झेले गए संघर्ष और आधुनिक जीवन शैली की दारुण व्यथा को जीवंतता से उभारा वहीं, दिल्ली के दिल में साहित्य की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। यहां आयोजित कई साहित्यिक गोष्ठियों की यादें साझा करते हुए उन्होंने कहा कि दिल्ली में सिर्फ संस्कृति नहीं साहित्यिक विविधता भी है। मैथिली का उदाहरण देते हुए उन्होंने स्वीकार किया कि यहां तक पहुंचने के बाद भाषाएं समृद्ध हो जाती हैं।

यूं हुआ उपन्यास का सृजन : हिंदी उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203-नाला सोपरा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखिका चित्रा मुदगल नें अपनी पुरस्कृत उपन्यास के सृजन में दिल्ली के एक वाकये को मददगार मानते हुए कहा कि 'पहले मैं भी किन्नर को सामान्य नजरिए से ही देखती थी। इसलिए अन्य यात्रियों की तरह जब ये ट्रेन या बस में पैसा मांगने आते थे तो मना कर देती थी। उनके प्रति मेरे मन में किसी प्रकार की संवेदनशीलता नहीं थी, लेकिन साल 1979 में सफर के दौरान नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मिले एक किन्नर से बातचीत ने मेरा नजरिया बदल दिया और वर्षों बाद वही मेरी पुरस्कृत कृति का मुख्य मात्र बना।' पुरस्कृत लेखिका ने राजधानी की गतिविधियों को साहित्य के संवर्धन में अमूल्य योगदान मानते हुए इस बात को और पुख्ता किया कि दिल्ली में न सिर्फ पाठकों के लिए बहुत कुछ है, बल्कि यहां लेखकों के लिए भी कई जीवंत विषयों को महसूस करने का अवसर है।

शरीफा की कृति में भी दिल्ली : भारत विभाजन पर आधारित फिल्मों और उपन्यासों पर केंद्रित व पुरस्कृत गुजराती किताब विभाजनी व्यथा की लेखिका शरीफा विजलीवाला ने विभाजन के दंश और अपनी कृति की उत्पत्ति को दिल्ली से जोड़ा। उन्होंने कहा कि 'विभाजन किसी देश की भूमि का ही नहीं होता, विभाजन लोगों की भावनाओं का भी होता है। विभाजन का दर्द वो ही अच्छी तरह जानते हैं, जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इसको सहा है। आजादी के सुनहरे भविष्य के लालच में तब भले ही विभाजन का जहरीला घूंट पी लिया हो, लेकिन आज दिल्ली को यह दर्द सालता होगा।'

व्यवहार में महात्मा..विचारों में गांधी : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वें जयंती वर्ष पर साहित्योत्सव में एक विशेष कोना भी बनाया गया है, जहां आगंतुक किताबों के जरिए गांधी के विचारों से अवगत हो रहे हैं। वहीं, चरखा कातकर उनके जीवन सिद्धातों को व्यवहार में भी ला रहे हैं। महात्मा गांधी द्वारा व उनपर विभिन्न भाषाओं में लिखी करीब 700 किताबें लोगों को उनके विचारों से जोड़ रही हैं और गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा के सदस्यों द्वारा निरंतर चलाया जाने वाला चरखा गांधी के विकेंद्रीकरण जीवन पद्धति और दर्शन से रूबरू करवा रहा है।

-हंस राज

साहित्योत्सव में विचारों के योद्धाओं के अनुभव

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 30 जनवरी।

J 31/1/19 p.3

'ये सभी लेखक हमारी भाषाई एकता और विचारों की ताकत के योद्धा हैं जो अपनी-अपनी तरह से अपनी-अपनी लड़ाइयां लड़ रहे हैं।' साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने साहित्योत्सव में अकादेमी द्वारा 2018 के लिए पुरस्कृत साहित्यकारों के लिए ये बातें कहीं। अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा' की रचना प्रक्रिया पर चित्रा मुद्गल ने कहा, 'कुछ रचनाकारों की कुछ कृतियां उनके अपराध-बोध की संतानें होती हैं। मैं यह उपन्यास लिख लेने के बाद उस अपराध-बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं, जिससे मुक्ति की कामना में मुझसे यह उपन्यास लिखवाया। हाशिए पर दलित और स्त्रियों को भी कुछ-न-कुछ अधिकार उपलब्ध हैं लेकिन ट्रांसजेंडर लोगों को अभी भी हमने तिरस्कृत कर मानवीय रूप में जीने के अधिकार तक छीने हुए हैं'।

गुजराती के लिए पुरस्कृत शरीफा बिजलीवाल ने भारत विभाजन संबंधी साहित्य के बारे में कहा कि इनको पढ़कर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुत्सान-पाकिस्तान, गुलामी-आजादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही अपनी जड़ों से उखड़ गया। मैथिली भाषा के लिए पुरस्कृत वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरे कहानी संग्रह परिणीता के ज्यादातर पात्र विषमताओं से पैदा हुए आक्रोश, आर्थिक दुश्चिंतता और सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार जान पड़ते हैं। राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने बताया कि कविता हमेशा नई दृष्टि देती है। संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुस्तक मम जननी की पहली कविता उन्होंने अपनी मां के बारे में लिखी हैं। कार्यक्रम का संचालन अनुपम तिवारी ने कहा।

Scanned by CamScanner

N 31.1.19 p.9

चित्रा मुद्गल और वीणा ठाकुर को मिला अकादमी पुरस्कार

विस, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी के 'साहित्योत्सव' के दूसरे दिन साहित्य अकादमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार पाने वालों में हिंदी में चित्रा मुद्गल और मैथिली में वीणा ठाकुर शामिल है।

बिहार के दरभंगा की वीणा ठाकुर फिलहाल ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी में मैथिली विभाग की अध्यक्ष हैं

वीणा ठाकुर मैथिली कथाकार और अनुवादक हैं। बिहार के दरभंगा की वीणा ठाकुर फिलहाल ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी में मैथिली विभाग की अध्यक्ष हैं। पहले इन्हें मिथिला विभूति सम्मान सहित अन्य सम्मान मिल चुका है।

। इनके अलावा सनन्त तांति (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बाङ्ला), रितुराज बसुमतारी (बोडो), इन्दरजीत केसर (डोगरी), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), एम. रमेशन नायर (मलयालम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी),मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिल), कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु), रहमान अब्बास (उर्दू)भी इस सम्मान से नवाजे गए। सम्मान में ताम्रफलक और एक लाख रुपये की राशि का चेक भेंट किया गया। प्रख्यात उड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास मुख्य अतिथि थे और श्रीलंकाई लेखक औरसाहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै विशिष्ट अतिथि। समारोह में अंग्रेज़ी और ओड़िया के पुरस्कृत लेखकों को छोड़कर सभी रचनाकारों को साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने सम्मानित किया। अंग्रेज़ी एवं ओड़िया के लेखक अस्वस्थ्यता के कारण यह सम्मान ग्रहण नहीं कर सके।

Scanned by CamScanner